पहाड़ और ढलान

मिस रेखा माथुर जब बी० टी० करने के पश्चात् लौटी तो हेडमिस्ट्रेस मिसेज़ शर्मा से भेंट न हो सकी। उनकी बदली आकोला हो गयी थी। हिन्दी के शिक्षक अग्रवाल लॉ करने के लिए नागपुर चले गये थे। मिस सुधा श्रीवास्तव पिछले दो महीनों से बीमार होकर छुट्टी पर थी। मिस केकरे का ब्याह हो गया था। और सुखराम चपरासी अपनी पत्नी, तीन बच्चों और जवान बहन को छोड़कर मर गया था।

एक लम्बे समय के बाद जब वह स्कूल के अहाते में आयी तो उसने अपनी चाल धीमी कर दी और चारों ओर आँखें फैलाकर ऐसे देखने लगी, जैसे पहली बार ससुराल से लौटी लड़की अपने घर को देखती है।

सामने बरगद का पेड़ वैसा ही घना था। कटहल की कुछ शाखें काट डाली गयी थीं, वहाँ एक नयी इमारत बन गयी थी और उसकी उजली-सफ़ेद दीवारों में नयी लैब-बिल्डिंग के साफ़-सुथरे दरवाज़ों और खिड़कियों के शीशे चमक रहे थे। अहाते के एक किनारे सुखराम की सरकारी झोंपड़ी थी, जिसमें वह पिछले पाँच बरसों से रह रहा

था। आज सुखराम की झोंपड़ी सूनी थी और दरवाज़े पर साँकल चढ़ी थी। सुखराम मर गया था।....रेखा ने उधर से आँखें हटा लीं।....एक दिन इस झोंपड़ी से सुखराम की लाश निकाली गयी होगी। इसी अहाते में उसकी विधवा पत्नी और जवान बहन की चीखों के साथ उसके नन्हें-नन्हें बच्चों की मासूम चीखें बरगद और कटहल के पत्तों से लिपटती अहाते में फैल गयी होंगी और शायद स्कूल की छात्राओं ने बरामदे में स्तब्ध होकर एकाध आँसू ढलका दिये हों, क्योंकि सुखराम सीधा आदमी था और पिछले पाँच वर्षों से घण्टा बजाया करता था।

इस हाई स्कूल के अहाते से लगा, निकट ही प्राइमरी स्कूल है। वहाँ से छोटे-छोटे बच्चों का शोर उठ रहा था। रेखा ने उधर आँखें फेरीं। दालान में बच्चों की क़तार थी और मास्टर साहब पहले की ही तरह आज भी घूम-घूमकर ऊँचे स्वर में पढ़ा रहे थे। एक क्षण के लिए रेखा को देखकर मास्टर साहब सहसा ठिठक गये, फिर खिड़की के पास, जो हाई स्कूल के अहाते की ओर खुलती है, आकर उसकी ओर देखने लगे।

रेखा ने जैसे सहमकर आँखें सामने कीं, डगों को संयत किया, काँधे से सरक रहे आँचल को सम्हाला और तेज़ क़दमों से चलने लगी।

भले ही रेखा के लौटने पर सब-कुछ बदल गया हो, पर यह मास्टर नहीं बदला, उसकी कक्षा नहीं बदली। रेखा के इस हाईस्कूल में आने के दिन से लेकर आज तक इसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। उसे उस मास्टर से कोई दिलचस्पी नहीं थी। पहले दिन भले ही उसने उड़ती निगाहों से उधर देखा हो।....बेतरतीब, सूखे-उलझे बालों और कुरते-पाजामे में एक साँवले रंग का २३ साल का नवयुवक, जो चेहरे से तो गम्भीर लगता है, पर वैसे शायद नहीं है। उसमें आख़िर विशेषता ही क्या थी। रेखा एम० ए० पास थी। उसकी उत्सुकता एक मैट्रिक पास

प्राइमरी स्कूल के शिक्षक के लिए, जो सुबह से लेकर शाम तक बच्चों को वर्णमाला के अक्षर सिखाता रहता है, क्या शोभनीय हो सकती है?

रेखा ने उपेक्षा से एक बार मुस्कराकर अपनी चाल तेज़ कर दी, पर सहसा उसे लगा, जैसे उसके डग आड़े-तिरछे पड़ रहे हैं, उसकी साड़ी आज शायद ऊँची बँधी है, पिंडलियों का बहुत-सा हिस्सा खुला रह गया है और मास्टर की चुभती आँखें शायद उसके खुले टखनों पर पड़ रही हैं।

हेडमिस्ट्रेस के आफ़िस के सामने पहुँचकर रेखा ने आराम की साँस ली। वह जैसे थक गयी थी, पाँव दुखने लगे थे और चेहरा तमतमा रहा था। टीचर्स-रूम के दरवाज़े पर खड़ी होकर उसने अपने को संयत किया और अन्दर घुसी। वहाँ कई अनजानी शक्लें, रूप-रंग और नाक-नक़्शे थे। मिस चौधरी ने, जो बीस से अधिक की न थी और मिडिल विभाग में टीचर थी, रेखा का सभी से परिचय करवाया। फिर अलग ले जाकर बड़ी देर तक बातें करती रही। स्कूल की बातें, नयी हेड-मिस्ट्रेस, उसकी योग्यता, उसके स्वभाव की बातें। सुखराम चपरासी, उसकी बीमारी, मौत तथा और भी कितनी ही बातें। उसकी अपनी बातों में, नीले रंग के ब्लाउज़, जिसे वह बहुत पसन्द करती थी और अक्सर पहना करती थी, के खोने से लेकर उसके ब्याह के तय हो जाने तक के समाचार थे। स्कूल की बातों में उसे पहले कितने पीरियड पढ़ाने पड़ते थे, अब कितने फ्री रहते हैं, फिर भी हेडमिस्ट्रेस की क्या-क्या शिकायतें हैं, इंस्पेक्ट्रेस जब आयी तो उससे कैसे प्रसन्न व प्रभावित होकर अपर-ग्रेड टीचर बना देने का वादा कर गयी और हेडमिस्ट्रेस ने क्या कहा और कौन-कौन जल उठे....

रेखा बोली, "सुना है, बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए कोई नाटक भी खेला जा रहा है।"

"हाँ," मिस चौधरी ने टालती-सी आवाज़ में कहा, "रिहर्सलें तो होती हैं, पर मैं दिलचस्पी नहीं लेती। यहाँ आज-कल कितनी गुटबन्दी हो गयी है, यह अभी तुम नहीं जान पाओगी। मैं ज़बरदस्ती ही अपने को सामने करने वालों में नहीं हूँ। और तो और, स्वयं हेडमिस्ट्रेस भी अपर-लोअर की फ़ीलिंग रखती है।"

रेखा ने पूछा, "कौन-सा ड्रामा खेला जा रहा है? कोई ऐतिहासिक है क्या?"

"नहीं, सामाजिक। एक सक्सेना हैं, हेडमिस्ट्रेस के परिचित, कहते हैं, उन्होंने देश-विभाजन और शरणार्थी समस्या पर कुछ लिखा है।"

"कैसा है? तुमने रिहर्सल तो देखी ही होगी?"

"मुझे कोई दिलचस्पी नहीं," मिस चौधरी उपेक्षा से हँसी और ओंठ बिचकाकर बोली, "पुराना राग अलापने के सिवाय उसमें और क्या होगा? कभी यह समस्या थी, पर आज उसका महत्व क्या है? देश के सामने आज इससे भी महत्वपूर्ण समस्याएँ हैं।"

रेखा को राजनीति से कोई दिलचस्पी नहीं थी। इस प्रकार की बहस से वह सदैव बचना चाहती थी।

मिस चौधरी रेखा की ओर कुछ पल ताकती रही। फिर बोली, "मिस्टर वर्मा कह रहे थे, तुम्हारे आ जाने से उनका भार काफ़ी हल्का हो जायगा। पिछले साल तुम्हारे नाटक को लोगों ने कितना पसन्द किया था, मिस माथुर, याद है न?"

रेखा के मन में एक पुलक-भरी मुस्कान आयी, पर ऊपर से वह संकोच में झुक गयी और एक उदार हँसी हँसकर बात बदल दी और कहने लगी कि जब वह बी० टी० की ट्रेनिंग में थी तो दिन कैसे बीत जाया करते थे।....किस-किस कवि-लेखकों से उसने परिचय बढ़ाया

और उन लोगों की प्रेरणा से स्वयं उसने कैसे एक दिन एक कविता लिख डाली और वह कितनी पसन्द की गयी....

आखिरी फ्री-पीरियड में मिस माथुर टीचर्स-रूम में आकर बैठ गयी। और दिन होता तो वह घर लौट गयी होती, पर आज वह मिस चौधरी की प्रतीक्षा कर रही थी।

पिछले साल वार्षिक उत्सव के अवसर पर ड्रामे आदि का सारा भार उसी पर था। रात-दिन जुटकर उसने एक अच्छे-से ड्रामे और डान्स के प्रोग्राम दिये थे और सबों की प्रशंसा की पात्र बनी थी। मिस्टर वर्मा (आर्ट टीचर) इस बार भी सारा भार उस पर ही डाल देने को हैं।

मिस माथुर मुस्करायी और आत्मसन्तोष के साथ वह खिड़की के बाहर देखने लगी। उसकी कल्पना रंगीन बल्ब और चमकते पर्दे वाले स्टेज, लोगों के अपार समूह और उत्सुकता से निहारती भीड़ पर अपने नाम के फैलते हुए प्रभाव को देख रही थी।....भीड़ में उसके क्वार्टर के आगे रहने वाला वह क्लर्क भी होगा, स्कूल में उससे जलने वाली टीचर्स होंगी, उसकी चर्चा-आलोचना करने वाले पड़ोसी होंगे और.... और वह प्राइमरी स्कूल का मास्टर भी होगा, जो....

रेखा के भीतर कोई चीज़ भरकर ओंठों पर बिछल गयी। तभी मिस चौधरी आयी। छुट्टी हो गयी थी और ढेरों लड़कियों का एक बढ़ता हुआ शोर फैल रहा था। रेखा मिस चौधरी के साथ बाहर आयी। पास वाले प्राइमरी स्कूल से छोटे-छोटे बच्चों का समूह कोलाहल करता निकल रहा था। रेखा ने अपनी आँखें उन प्रफुल्लित बच्चों पर डालीं और, जाने क्यों, एक पल के लिए उसका मन उदास हो उठा। ....उसके भीतर कभी-कभी ऐसा क्या कुछ सुलगने और बुझने लगता है?

सहसा एक ओर इंगित कर मिस चौधरी बोली, "उन्हें देख रही हैं न, वही है उस ड्रामे का लेखक, जो अपने यहाँ खेला जा रहा है।"

रेखा ने देखा, बच्चों के बीच से वही मास्टर हाथ में एक मोटी-सी किताब लिये निकल रहा था।

रेखा ने आश्चर्य से पूछा, "क्या इसका ?"

"क्यों ? "मिस चौधरी मुस्करायी, तुम क्या विश्वास नहीं करतीं ?"

कुछ देर तक रेखा ने कोई जवाब नहीं दिया। चुपचाप चलती रही, फिर मुस्कराकर बोली, "नहीं, प्रसाद, प्रेमी और अश्क से भी विशेष कुछ इन्होंने लिखा है क्या, यही सोचती हूँ।"

मिस चौधरी हँसकर बोली, "शायद ! अच्छा, मिस माथुर, प्रतिभा क्या ख्याति-प्राप्त व्यक्तियों में ही होती है ? क्या यह सम्भव नहीं कि इन्होंने प्रतिष्ठित लेखकों से भी विशेष कुछ लिखा हो ?"

रेखा ने जवाब नहीं दिया। उसकी कल्पना में वह मास्टर उभरा, जिसके नाम तक से वह परिचित नहीं थी, पर जिसे पिछले कुछ वर्षों से वह जानती है और बराबर देखा करती है।

मिस चौधरी के बार-बार पूछने पर भी कि सहसा वह क्या सोचने लग गयी, उसका उत्साह इतना शिथिल-सा क्यों हो गया और वह अकारण ही कभी-कभी उदास क्यों हो जाती है, रेखा ने कुछ भी नहीं बताया, सिर्फ़ मुस्कराकर टाल गयी। उसके बाद मिस चौधरी नाटक के विषय में बातें करती रही कि उस नाटक की सफलता के लिए स्वयं हेडमिस्ट्रेस कितनी परेशान है, कौन-कौन लड़कियाँ पार्ट ले रही हैं और किन-किन नये लोगों को इस बार स्टेज पर उतारा जा रहा है। मिस माथुर चुपचाप सुनती रही। जब चौराहा आया तो मिस चौधरी को एक ओर की सड़क पर मुड़ने को छोड़

रेखा आगे बढ़ गयी।

*

रेखा उस नाटक में भाग न ले सकी, यद्यपि वर्मा जी ने बहुत आग्रह किया और हेडमिस्ट्रेस भी बुरा मान गयी। पर हेडमिस्ट्रेस नाराज़ न हो जाय, इसलिए अपनी असमर्थता बताते हुए उसने कहा कि वह उस कार्यक्रम को सफल देखने की पूरी-पूरी कामना करती है। भले ही नाटक में भाग न ले सके, पर अलग से तो वह अपना कोई प्रोग्राम दे ही सकती है। उसने हेडमिस्ट्रेस को आश्वासन दिलाया कि वह एक सुन्दर तथा कलापूर्ण नृत्य प्रस्तुत करने की अवश्य कोशिश करेगी।

नाटक की रिहर्सलें होती रहीं। रेखा तो बहुत बार वर्मा जी के बाध्य करने और वादा करने पर भी रिहर्सल-रूम तक नहीं जा सकी। लेकिन उसने अपने प्रोग्राम के लिए मैट्रिक की ग्यारह लड़कियों में से दीपिका को चुना। दीपिका के नृत्य पर रेखा को विश्वास था। उसकी रिहर्सल दिन में तीन-चार बार होने लगी। कठिनाई केवल इतनी थी कि लड़की बड़ी जल्दी घबराकर निराश हो जाती थी और सकुंचाती बहुत थी। रेखा को विश्वास दिलाने के जितने तरीके मालुम थे, सबका उसने प्रयोग किया और हर रिहर्सल में जितना उत्साह दिलाया जा सकता था, दिलाया।

जिस रात नाटक होने को था, उस दिन सुबह स्कूल आकर मिस माथुर फिर घर नहीं जा पायी। स्टेज यद्यपि बहुत पहले ही बन गया था और पूरी तरह सजाया भी जा चुका था, पर मिस माथुर को सन्तोष नहीं था। वह स्वयं अपने हाथों से कुछ जोड़ना-घटाना चाहती थी।

सब-कुछ ठीक करके, फ़ुट लाइट, साइड लाइट जलाकर उसने देखा और साँझ के पहले ही पूरी सजा के साथ दीपिका की ग्रैंड-रिहर्सल

ली। तब जाकर उसे ज़रा छुट्टी मिली और वह नहाने-धोने घर लौटी।

प्रोग्राम भले सात से हो, पर उसे तो जल्दी पहुँचना था। दीपिका का मेक-अप अपने सामने कराना था।

तेज़ क़दमों से रेखा अपने कमरे में आयी। और दिन होता तो वह गीला जिस्म तौलिये से सुखाती बड़ी देर तक गुनगुनाती रहती। गाना उसे नहीं आता था, पर फ़िल्मों की एकाध कड़ियाँ वह गुनगुना लेती थी। पर आज समय कितना कम था! उसने फुर्ती से तौलिया खींचा, गीली गर्दन पोंछी और अपनी दोनों हथेलियों को फैलाकर उस पर अपना चेहरा रख दिया। तौलिये के नर्म-नर्म रेशे कितने मुलायम थे! एक हल्की-सी कँपकँपी रेखा के पूरे बदन में दौड़ गयी और गुनगुनाहट का स्वर ज़रा ऊँचा करते हुए उसने सिमटे-बँधे बाल खोल दिये और सूटकेस खोलकर कपड़े निकाल, चट पहन, जल्दी बालों में कंघी फेरने लगी।

फिर भी जब रेखा पहुँची तो नाटक शुरू हो गया था और हाल पूरा भरा हुआ था। ग्रीन-रूम के दरवाज़े पर ही मिस चौधरी ने रेखा को आड़े हाथों लिया कि सारा सिंगार उसे क्या आज ही करना था। रेखा झेंपकर हँसने लगी। तभी ग्रीन-रूम से दीपिका भागी-भागी आयी और उतरे चेहरे से बोली, "बहन जी!"

"अरे दीपी, तेरा मेक-अप अभी तक नहीं हुआ क्या?" रेखा ने दीपिका के काँधे पर हँसते हुए हाथ रखकर पूछा। उस जगह शायद उसे नाराज़ होना था, पर वह जाने कैसे अपने स्वभाव के विपरीत मुस्करायी और पूरे उत्साह और प्रसन्नता के साथ दीपिका के कपड़े बदलवाये, अपने सामने मेक-अप करवाया और अन्तिम बार हिदायतें देकर, मिस चौधरी के साथ ग्रीन-रूम के बाहर आयी।

नाटक समाप्त होने में अभी दो दृश्य शेष थे। पर्दा गिरा हुआ था और हाल में लोगों का शोर गूँज रहा था। बीते दृश्य की आलोचना, हँसी-मज़ाक व फुसफुसाहटें, दबी-दबी हँसी, चूड़ियों की खनखना हट और सहसा गोद के किसी बच्चे के मचल उठने का स्वर....

स्टेज के कोने से, पर्दे के पीछे से रेखा ने लोगों की भीड़ पर उड़ती निगाह डाली। पर्दे पर कितने सारे लोगों की उत्सुक आँखें अटकी हुई हैं। उसकी आँखें बग़ल में खड़े ब्लैक-बोर्ड पर पड़ीं, जिस पर उस दिन का पूरा कार्यक्रम लिखा था, नाटक, उसके लेखक, निर्देशक, कलाकार और पार्श्व संगीतकार। रेखा की आँखें बिछलकर नीचे आ गयीं, नृत्य के प्रोग्राम के आगे दीपिका और उसके नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में उसका नाम लिखा था, निर्देशिका कुमारी रेखा माथुर, एम० ए०, बी० टी०। क्षणकाल के लिए रुककर उसने फिर अपनी आँखें भीड़ पर डालीं, जहाँ उसके बहुत-से परिचित लोग और नाटक का लेखक भी था, जिसे उसने निमिष-मात्र के लिए भी नहीं देखा।.... और फिर नाटक शुरू हो गया। लेकिन उसे क्या? उसमें उसे क्या देखना था!....उस नाटक का एक भी दृश्य देख सकने का धैर्य आखिर उसमें क्यों नहीं है?

सहसा रेखा की आँखें चमकने लगीं और वह मुस्करायी। मिस चौधरी बड़े ध्यान से नाटक देख रही थी। अकारण ही कोई बात कहकर रेखा ने मिस चौधरी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और हँसी की बात न होने पर भी हँसने लगी।

उसके थोड़ी देर बाद ही नाटक समाप्त हो गया और चारों ओर तालियाँ गूँज उठीं। रेखा अपने कान पर हाथ रखे तेज़ी से ग्रीन-रूम में आयी। दीपिका तैयार ही थी। हाल की लाइट बुझी, स्टेज के फुट-बल्ब जले और एक कोने से रंगीन बल्बों ने अपनी रोशनी फेंकी और

रेखा ने हाल के सब लोगों के साथ सुना, लाउड स्पीकर में दीपिका के नाम के बाद ही उसका नाम काफ़ी सम्मान के साथ लिया जा रहा था।

नृत्य समाप्त हुआ, पर्दा गिरा और तालियों की आवाज़ हाल में गूंजने लगी, दीपिका अपनी उसी पोशाक में हाँपती-मुस्कराती आकर रेखा से लिपट गयी। रेखा ने बिना एक भी शब्द बोले उसे अपनी बाहों में भर लिया और उसके माथे पर अपने ओंठ रख दिये।

उसके बाद पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम था। दीपिका से अलग होकर रेखा मिस चौधरी के पास आयी। और उसके साथ ही अपने हृदय की धड़कनों को मुस्कराहट की परतों में छिपाती दर्शकों के बीच आ बैठी।

रंग-बिरंगी साड़ियाँ, हँसते-मुस्कराते चेहरे, तरह-तरह की खुशबूएँ....

ड्रामे का लेखक अपने हाथ में कोई मोटी-सी पुस्तक लिये अपने पास बैठे किसी मित्र के साथ बड़ी गम्भीरतापूर्वक बातें कर रहा था।

तभी जिलाधीश महोदय का भाषण प्रारम्भ हुआ।

रेखा ने उकताकर मिस चौधरी की ओर देखा और मुस्कराने लगी। तभी सहसा हाल में तालियाँ बज उठीं। लड़के शायद जिलाधीश के भाषण से ऊबे बैठे थे। छूटते ही तालियाँ पीटने लगे।

जिलाधीश महोदय उठे और प्रथम पुरस्कार की घोषणा हुई। रेखा शायद सुन न पायी। उसका हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था और हथेलियाँ पसीने से गीली हो रही थीं। तालियों के मध्य उसने देखा, मास्टर अपने एक हाथ से धोती सम्हालते, चमचमाता कप लिये जिलाधीश के आगे झुक रहा है....

*

जब हाल खाली हो गया और ग्रीन-रूम नाटक में भाग लेने वालों

और स्कूल की दूसरी लड़कियों से भर गया तो वहाँ से निकलकर रेखा पीछे के बरामदे में आ गयी। ग्रीन-रूम में मास्टर लड़कियों और अध्यापिकाओं से अपनी प्रशंसा सुन रहा था और संकोच का अभिनय करता मुस्करा रहा था। उसे पुरस्कार में मिला कप बारी-बारी से सब के हाथों में घूम रहा था। सहसा रेखा की निगाह दीपिका पर पड़ी। वह द्वितीय पुरस्कार में मिली अपनी किताबों को उपेक्षा से सहेली को थमाकर आगे बढ़ी और मास्टर का कप देखकर नाटक की प्रशंसा करती उसकी ओर देखने लगी। मास्टर ने मुस्कराकर दीपिका पर अपनी आँखें टिका दीं। रेखा ने चौंककर देखा, दीपिका, जिसे वह शर्मीली और सुशील समझे थी, कितनी निर्लज्ज है! मास्टर की आँखों में कैसा भाव है!

रेखा वहीं अँधेरे में खड़ी रही। तभी मिस चौधरी ने आकर उसे पुकारा, "मिस माथुर!"

रेखा कुछ नहीं बोली। चुपचाप मिस चौधरी के साथ हो ली। मिस चौधरी रेखा के काँधे पर हाथ रखकर सहानुभूतिपूर्ण स्वर में कह रही थी, "मैं न कहती थी कि यहाँ पक्षपात-ही-पक्षपात है। नाटक में प्रथम पुरस्कार के योग्य ऐसा क्या था, बताओ तो!"

और रेखा कुछ जवाब दे कि मिस चौधरी फिर बोल उठी, "मैं जानती हूँ, तुम कुछ नहीं बोलोगी। पर, मिस माथुर, तुम्हारी आँखों में जो है, वह तो इस अँधेरे में भी नहीं छिप रहा है।"

रेखा के भीतर से जैसे कोई चीज़ एकबारगी उमड़कर गले तक आयी, उसके ओंठ दबे, काँपे, पर अपने को संयत कर उसने क़दम उठाया और बोली, "नहीं, वैसी कोई बात नहीं, ड्रामा वास्तव में अच्छा रहा होगा।"

* * *